International Journal of Academic Research
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]

आत्मनिर्भर भारत-लिंग आधारित दृष्टिकोण

डि.रघुराम प्रसाद
हिन्दी प्राध्यापक, सरकारी स्नातक महाविद्यालय, तिरवूरु.

प्रस्तावना

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है ऐसा भारत जो आर्थिक, सामाजिक रूपसे स्वयं सक्षम हो । ज्ञान-विज्ञान, सांकेतिकता और अनुसंधान में सारे संसार में अग्रणी हो। नर-नारी साक्षरता, परस्पर सहयोग और स्वावलंबन में दत्तचित्त हो। शिक्षा, रोजगार, वेतन महत्त्वपूर्ण निर्णयों के विषय में भेद-भाव न हो । नारी-सेवा, समर्पण, प्रेम और त्याग का उचित मूल्य हो। घरेलू काम-काज, बच्चों की देख-भाल में पुरुषों की भी भागीदारी अधिक हो; जिससे घर-परिवार का निर्वाह सुचारू रूप से हो और घर व समाज में घर कर गई लिंगाधारित भेद-भावना " बालक वंशोद्धारक और बालिका पराया धन" वाली दकियानूसी विचार का अंत हो और देश का समग्र विकास हो ।

लिंग आधारित दृष्टिकोण का अर्थ

लिंग आधारित दृष्टिकोण का अर्थ है समाज में महिलाओं और पुरुषों की भिन्न आवश्यकताओं और चुनौतियों को समझना। लंबे समय से समाज में महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने के अवसरों में असमानता का सामना करना पड़ा है। यदि आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को सफल बनाना है, तो इन असमानताओं को दूर करना आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद ने महिला सशक्तीकरण के संबंध में कहा- "राष्ट्र प्रगति महिलाओं की स्थिति से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है । महिला-शिक्षा व आत्मनिर्भरता महिला -उन्नति की कुंजियां हैं। "

महिलाओं की भूमिका: आत्मनिर्भर भारत में

महिलाएं देश की आधी आबादी हैं और उनकी सक्रिय भागीदारी के बिना आत्मनिर्भर भारत की कल्पना अधूरी है। आज महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, व्यवसाय और कृषि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योग दे रही हैं। सावित्री बाई फूले,फातिमा शेख, पंडिता रमाबाई सरस्वती, महादेवी वर्मा (हिन्दी लेखिका) आदि ने महिला-असमानता के विरुद्ध आवाज उठायी और महिला-शिक्षा-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। आजकल सुधा मूर्ति (इन्फोसिस फाउंडेशन), अनीता रामपाल (पूर्व डीन, दिल्ली विश्वविद्यालय), गायत्री नायर लोबो (एजुकेट गर्ल्स) आदि महिला-शिक्षा को बढावा देने व लिंग आधारित असमानता को मिटाने में कटिबद्ध है। विज्ञान के क्षेत्र में लिंग आधारित असमानता को पारकर भारत का नाम रोशन करनेवाली महिलाएं हैं-डा.टेसी थामस (भारत की महिला मिसाइल), कल्पना चावला (पहली भारतीय अंतरिक्ष यात्री, रितु करिधल (चंद्रयान-2, निर्देशिका), डा.असीमा चटर्जी (कैंसर, मलेरिया रोधक दवा-विकास के लिए प्रसिद्ध, अन्ना मणि (प्रसिद्ध मौसम वैज्ञानिक), जानकी अम्माल (हाइब्रीड गन्ना प्रजाति शोधक) डा.इंदिरा हिंदुजा (भारत की पहली टेस्ट ट्यूब बेबी की जन्मदात्री आदि। निर्मला सीता रमण, ममता बनर्जी,स्मृति इरानी आदि राजनीति में अपनी पहचान बना रही है। किरण मजूमदार (बायोकान), फाल्गुनी नायर (ब्यूटी ई-कामर्स), वंदना लूथरा VLCC, स्वास्थ्य, सुंदरता, कल्याण, उद्योग), राधा वेंबू (टेक और क्लाउड आधारित सेवा), वाणी कोला (स्टार्ट अप्स), विनीता सिंह (शुगर कास्मोटिक्स), उपासना टाकू (मोबी क्विक, मोबाइल भुगतान) आदि व्यवसाय व उद्यम के क्षेत्र में विख्यात हैं।

सरकार ने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे स्टार्टअप योजनाएँ, स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups), कौशल विकास कार्यक्रम आदि। इन योजनाओं के माध्यम से महिलाएं स्वरोजगार प्राप्त कर रही हैं और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं।

चुनौतियाँ

हालाँकि महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी कई चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं—

शिक्षा और रोजगार में असमान अवसर: भारत में प्राथमिक शिक्षा के बाद लगभग 39.4% लडकियां घरेलू व सामाजिक समस्याओं से स्कूल छोड देती हैं।

विज्ञान, तकनीक,इंजीनियरिंग व गणित (STEM) के क्षेत्र में महिला-प्रवेश (42.5%) और पढाई-समापन की दर पुरुषों की तुलना में कम है। भारत में महिला-कार्यबल भागीदारी दर दुनिया में सब से कम है। वह भारत में महज 41.7% है जब कि दुनिया-भर में वह 50% है।

वेतन में लैंगिक अंतर (Gender Pay Gap): भारत में महिलाएं समान काम के लिए पुरुषों की तुलना में 20%-34% कम पाती है। पुरुष प्रति घंटा रू. 231-242 तक कमाते हैं जब कि औरतें सिर्फ रू.184-196 मात्र। इसके पीछे औरतों की अशिक्षा और दैहिक दुर्बलता सामाजिक असमानता व अप्रधानता जैसे कारण निहित हैं।

सामाजिक रूढ़ियाँ और भेदभाव: पितृ सत्ता, बेटों को बुढापे का सहारा और बेटियों को पराया धन मानना और उनको जड से मिटा देना, शिक्षा व स्वास्थ्य के विषय में बेटियों के प्रति भेदभाव दिखाना , उनके घूमने-फिरने, पहनने-ओढने व काम-धंधा चुनने पर पाबंदियां लगाना,घर में व कार्य स्थल में उनके ऊपर हिंसा, अत्याचार करना आदि भारत में घर कर गई। आत्मनिर्भर भारत के लिए इन सब से मुक्त होना अनिवार्य है।

निर्णय लेने में कम भागीदारी: बेटे-बेटियों को पैदा करने से लेकर उनका पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, काम-धंधा व शादी-ब्याह जैसे महत्त्वपूर्ण निर्णयों में महिला की भागीदारी भारत में नहीं के बराबर है। उसे अपने विचार खुलकर व्यक्त करने का स्वातंत्र्य नहीं है। नारी-अशिक्षा, अनमेल विवाह, घरेलू हिंसा, प्यार-मुहब्बत के नाम पर महिलाओं पर बाहर हो रहे अत्याचारों के मूल में पितृसत्ता, नर की बर्बरता, नारी की पराधीनता व भागीदारी का अभाव निहित हैं।

पुरुष वर्चस्व: भारतीय समाज में कूट-कूटकर भरा पुरुष-वर्चस्व उसके आत्मनिर्भर होने में बाधा डाल रहा है। नारियों के प्रति पुरुषों की भोग दृष्टि अब भी बरकरार है। देह-व्यापार कराने के लिए नारियों की तस्करी कर रहे हैं। कांडोम जैसे गर्भ रोधक साधनों व पुरुषों से प्रयुक्त अंदरूनी वस्त्रों व देह-दुर्गंध रोधकों के प्रचार में नारियों का अनुचित प्रदर्शन, फिल्मों में नारियों की नंगी-नाच, अश्लील संवाद, मुक्त भोग, धारावाहिकों में विवाहित पुरुषों से अवैध संबंधों केलिए लालायित कुलटा-प्रदर्शन आदि उक्त भोग दृष्टि के प्रमाण हैं। पुरुषों का खुले आम मैदान जाना, भरे बाजारों में बेझिझक पेशाब करना जैसे सामाजिक दुराचारों के पीछे लिंग निर्भर भेद-भावना विद्यमान है। पुराण कथाओं में नारी शील-संस्कार की देवी, शक्ति रूपिणी, प्राणांतक दानव संहारिणी के रूप में दिखाई देती है; लेकिन वास्तव में वह रण चंडी के स्थान पर बलि की बकरी बनते, धैर्य से अत्याचारियों की धज्जियां उड़ाने के बजाय उनसे गिड़गिड़ाते, घुटने टेकते आत्मरक्षा के लिए किसी वीरपुरूष की राह देखते नज़र आता है। शासन सभाओं में, प्रशासन में नारी-भागीदारी पुरुष की तुलना में नगण्य है। यदि भारत को आत्मनिर्भर बनना है तो, पुरुष वर्चस्व का नामों निशान मिटा देना अवश्यंभावी है।

समाधान और आवश्यक कदम

आत्मनिर्भर भारत को मजबूत बनाने के लिए निम्न कदम आवश्यक हैं—

1.'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' जैसे समाज-चेतना कार्यक्रमों से बालिका-शिशुओं को जड से मिटा देने पर रोक लगाना, बेटियों की शिक्षा को प्राथमिकता देना।

2.नारियों को रोजगार और उद्यमिता में समान अवसर व वेतन प्रदान करना।

3.दिशा, शक्ति apps के जरिए कार्यस्थलों पर सुरक्षा और सम्मान सुनिश्चित करना।

4.सामाजिक जागरूकता बढ़ाकर लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करना।

5.नीति निर्माण और नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना।

निष्कर्ष

आत्मनिर्भर भारत तभी संभव है जब समाज में लैंगिक समानता स्थापित हो और महिलाओं को समान अवसर और अधिकार मिलें। महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी से ही देश आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से मजबूत बन सकता है। इसलिए आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में लिंग आधारित दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है।

"We need more women in leadership roles
Their ideas, their vision and their goals
We own our bodies and we own our minds
We leave oppression far behind
We lift each other up we amplify our voice
We fight for our rights and our choice
Together we reach the highest of heights
And achieve our goals with all our might
Let's build a world where live conquers hate
And create a future we will all celebrate.." From “Let**'s Fly Together”by Ayesha Islam**